बुन्देलखण्ड के किसानों के लिए साइलेज पर आधारित एक दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन **AICRP**-17 (फ़ोडर) के अंतर्गत

भा.वा.अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज ने ग्रामीणों को साइलेज बनाने तथा प्रशिक्षण–सह–कार्यशाला का आयोजन केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह के मार्गदर्शन में दिनांक 17.10.2024 को गौवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्र, आरोग्यधाम, चित्रकूट प्रांगण में आयोजित किया गया। अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना–17 (फोडर) के अन्तर्गत ग्रामीणों और पशुपालकों को साइलेज बनाने की प्रक्रिया हेतु प्रशिक्षित किया गया, जिससे कृषक सर्दियों तथा ग्रीष्मकाल में भी अपने पशुओं के लिए पोषण युक्त चारा उपलब्ध करा सकेंगे। इस कार्यक्रम में चारा बैंक बनाने की विस्तृत जानकारी भी प्रदान की गयी। इस क्रम में भा. वा.अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र द्वारा प्रयागराज के समीपवर्ती क्षेत्रों में सहजन, कचनार, गम्भार और अगस्ती के 500 से अधिक पौधे रोपकर चारा बैंक तैयार किया गया है, जिसकी विस्तृत जानकारी कार्यक्रम में उपस्थित कृषकों को वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा दी गयी। यह चारा बैंक भविष्य में पशुपालकों को हरे चारे की आपूर्ति साल भर करेगा। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने साइलेज बनाने की प्रकिया को समझाते हुए कहा कि साइलेज में अवायवीय प्रक्रिया फसलों के पोषक तत्वों को बनाए रखने में मदद करती है, जिससे पशुओं के लिए सन्तुलित आहार सुनिश्चित होता है और यह एक भरोसेमन्द, ऊर्जा समृद्ध चारा स्रोत है। साइलेज में सूखी घास की तुलना में कहीं ज्यादा पौष्टिक तत्व और

फीड के मुकाबले कम रसायन होते हैं। वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा प्रमुख, डॉ. मनोज त्रिपाठी, डी आर आई, चित्रकूट ने भी साइलेज से होने वाले लाभों से अवगत कराया तथा इसका उपयोग करने से दुधारू पशुओं के दूध की गुणवत्ता में होने वाले सुधारों के बारे में बताया। केन्द्र के शोधार्थी स्वाति प्रिया तथा सत्यव्रत सिंह ने साइलेज बनाने की विधि का प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में चित्रकूट के 50 से अधिक कृषक तथा डी आर आई, चित्रकूट के वीरेन्द्र प्रजापति, योगेन्द्र मिश्रा तथा देव कुमार विश्वकर्मा एवं अन्य लोग उपस्थित रहे।

बुन्देलखण्ड के सूखा प्रभावित क्षेत्रों के उन्नयन हेतु वृक्ष तथा घास प्रजातियों से संरक्षित हरे चारे का उत्पादन, संरक्षण एवं आजीविका के सम्भावित स्रोतों पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

वैकल्पिक ऊर्जा-बैल ऊर्जा
की मशीन का सफल संचालन तथा विद्युत-
उत्पादन जैसे अनेक कार्य किये जाते हैं।
Latitude: 25.150331
Longitude: 80.864175
Elevation: 149.81±8 m
Accuracy: 6.3 m
Time: 10-17-2024 11:41
Note: DRI arogyadham
Powered by NoteCam

संरक्षित पशु आहार, समृद्धि का आधार
प्रशिक्षण सह कार्यशाला
साइलेज: बुन्देलखण्ड के किसानों के लिए एक अवसर
संरक्षित हरा चारा (साइलेज/Silage)
अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (चारा/फॉडर)
आई.सी.एफ.आर.ई - पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द, प्रयागराज
दिनांक - 17 अक्टूबर 2024

संरक्षित हरा चारा (साइलेज/Silage)
अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (चारा/फॉडर)
आई.सी.ऍफ.आर.ई - पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज
दिनांक - 17 अक्टूबर 2024
आयोजन स्थल - चित्रकूट (बुन्देलखण्ड)
भा.कृ.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज

संरक्षित पशु आहार, समृद्धि का आधार
प्रशिक्षण सह कार्यशाला

संरक्षित पशु आहार, समृद्धि का आधार
प्रशिक्षण सह कार्यशाला

संरक्षित पशु आहार, समृद्धि का आधार

संरक्षित पशु आहार, समृद्धि का आधार
प्रशिक्षण सह कार्यशाला

सूखे मौसम में हरे चारे की कमी को दूर करने दिया गया प्रशिक्षण

साइलिज़ बनाने की नई प्रक्रिया से किसानों को मिलेगा उच्च गुणवत्ता का चारा

चित्रकूट.एमपीजेएस न्यूज

दीनदयाल शोध संस्थान के गौवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्र, चित्रकूट में गुरुवार को भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र, प्रयागराज द्वारा सूखे मौसम में हरे चारे की कमी को दूर करने के लिए ग्रामीणों को साइलिज़ बनाने का प्रशिक्षण कार्यक्रम अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना-17 के अंतर्गत सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

इस पहल के अंतर्गत ग्रामीणों और पशुपालकों को साइलेज बनाने की प्रक्रिया सिखाई गई, जिससे कृषक सर्दियों और ग्रीष्मकाल में भी अपने पशुओं के लिए पोषक चारा उपलब्ध करा सकेंगे। इस कार्यक्रम के साथ ही, चारा बैंक बनाने की विस्तृत जानकारी दी है। यह चारा बैंक भविष्य में पशुपालकों को हरे चारे की आपूर्ति सालभर करेगा।

प्रयागराज से आई केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने कहा कि साइलो में किण्वन प्रक्रिया फसलों के पोषक तत्वों को बनाए रखने में मदद करती है, जिससे पशुओं के लिए संतुलित आहार सुनिश्चित होता है और यह एक भरोसेमंद, ऊर्जा-समृद्ध चारा स्रोत बनता है। साइलेज में सूखी घास की तुलना में कहीं ज्यादा पौष्टिक तत्व और फीड के मुकाबले कम रसायन होते हैं। वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा प्रमुख, डॉ. मनोज त्रिपाठी, दीनदयाल अनुसंधान संस्थान (डीआरआई), चित्रकूट ने जानकारी दी कि साइलिज़ पशुओं के स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है और इसका उपयोग करने से दुधारू पशुओं के दूध की गुणवत्ता में सुधार होता है। कार्यक्रम में प्रयागराज से आए शोर्थी स्वाति प्रिया, सत्यव्रत सिंह ने साइलेज बनाने के विधि का प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन दिया। कार्यक्रम में चित्रकूट से वीरेंद्र प्रजापति, योगेंद्र मिश्रा, देव कुमार विश्वकर्मा एवं अन्य लोग उपस्थित रहे।

साइलेज विधि से दूर करें हरे चारे की कमी

लोक भारती न्यूज ब्यूरो

चित्रकूट। दीनदयाल शोध संस्थान के गौवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्र चित्रकूट में गुरुवार को भावाअशिप पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केंद्र प्रयागराज ने सूखे मौसम में हरे चारे की कमी को दूर करने के लिए ग्रामीणों को साइलिज बनाने का प्रशिक्षण कार्यक्रम अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत किया गया। इस पहल के तहत ग्रामीणों और पशु पालकों को साइलेज बनाने की प्रक्रिया सिखाई गई। कार्यक्रम के साथ ही चारा बैंक बनाने की विस्तृत जानकारी दी है। यह चारा बैंक भविष्य में पशु पालकों को हरे चारे की आपूर्ति सालभर करेगा। प्रयागराज से आई केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने कहा कि साइलो में किण्वन प्रक्रिया फसलों के पोषक तत्वों को बनाए रखने में मदद करती है। जिससे पशुओं के लिए संतुलित आहार सुनिश्चित होता है और यह एक भरोसेमंद, ऊर्जा समृद्ध चारा स्रोत बनता है। साइलेज में सूखी घास की तुलना में कहीं ज्यादा पौष्टिक तत्व और फीड के मुकाबले कम रसायन होते हैं। यह जानकारी वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. मनोज त्रिपाठी डीआरआई ने दी है।

प्रशिक्षण में जानकारी देते वैज्ञानिक।

स्वदेश

सतना - नव स्वदेश

18 Oct 2024

कार्यशाला सूखे मौसम में हरे चारे की कमी को दूर करने गौवंश विकास व अनुसंधान केन्द्र में दिया गया प्रशिक्षण

साइलिज बनाने की नई प्रक्रिया से किसानों को मिलेगा उच्च गुणवत्ता का चारा

नव स्वदेश ■ चित्रकूट

दीनदयाल शोध संस्थान के गौवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्र, चित्रकूट में गुरुवार को भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केंद्र, प्रयागराज द्वारा सूखे मौसम में हरे चारे की कमी को दूर करने के लिए ग्रामीणों को साइलिज़ बनाने का प्रशिक्षण कार्यक्रम अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना-17 (फूडर) के अंतर्गत सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। इस पहल के अंतर्गत ग्रामीणों और पशुपालकों को साइलेज बनाने की प्रक्रिया सिखाई गई, जिससे कृषक सर्दियों और ग्रीष्मकाल में भी अपने पशुओं के लिए पोषक चारा उपलब्ध करा सकेंगे। इस कार्यक्रम के साथ ही, चारा बैंक बनाने की विस्तृत जानकारी दी है। यह चारा बैंक भविष्य में पशुपालकों को हरे चारे की आपूर्ति सालभर करेगा।

डॉ. अनीता तोमर ने साझा की जानकारी

प्रयागराज से आई केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने कहा कि साइलो में किण्वन प्रक्रिया फसलों के पोषक तत्वों को बनाए रखने में मदद करती है, जिससे पशुओं के लिए संतुलित आहार सुनिश्चित होता है और यह एक भरोसेमंद, ऊर्जा-समृद्ध चारा स्रोत बनता है। साइलेज में सूखी घास की तुलना में कहीं ज्यादा पौष्टिक तत्व और फीड के मुकाबले कम रसायन होते हैं।

ये रहे मौजूद

वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा प्रमुख, डॉ. मनोज त्रिपाठी, दीनदयाल अनुसंधान संस्थान (डीआरआई), चित्रकूट ने जानकारी दी कि साइलिज़ पशुओं के स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है और इसका उपयोग करने से दुधारू पशुओं के दूध की गुणवत्ता में सुधार होता है। कार्यक्रम में प्रयागराज से आए शोर्थी स्वाति प्रिया, सत्यव्रत सिंह ने साइलेज बनाने के विधि का प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन दिया। कार्यक्रम में चित्रकूट से वीरेंद्र प्रजापति, योगेंद्र मिश्रा, देव कुमार विश्वकर्मा एवं अन्य लोग उपस्थित रहे।

गौवंश का विकास करने अनुसंधान केन्द्र में दिया गया प्रशिक्षण

चित्रकूट। दीनदयाल शोध संस्थान के गौवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्रए चित्रकूट में गुरुवार को सूखे मौसम में हरे चारे की कमी को दूर करने के लिए ग्रामीणों को साइलिज बनाने का प्रशिक्षण कार्यक्रम अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना17 के अंतर्गत आयोजित किया गया। इस पहल के अंतर्गत ग्रामीणों और पशुपालकों को साइलेज बनाने की प्रक्रिया सिखाई गई, जिससे कृषक सर्दियों और ग्रीष्मकाल में भी अपने पशुओं के लिए पोषक चारा उपलब्ध करा सकेंगे। इस कार्यक्रम के साथ ही चारा बैंक बनाने की विस्तृत जानकारी दी है। यह चारा बैंक भविष्य में पशुपालकों को हरे चारे की आपूर्ति सालभर करेगा। प्रयागराज से आई केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने कहा कि साइलो में किण्वन प्रक्रिया फसलों के पोषक तत्वों को बनाए रखने में मदद करती है।

विंध्या पोल्ट्री एसोसिएट्स
ब्रायलर रेट

ब्रायलर छोटा	- 122.00 रू.
ब्रायलर मीडियम	- 114.00 रू.
ब्रायलर बड़ा	- 86.00 रू.
ब्रायलर जम्बो (3kg+)	- 86.00 रू.

Mob. 8518880452, 53, 56, 57, 59

वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा प्रमुख डॉ. मनोज त्रिपाठी, दीनदयाल अनुसंधान संस्थान चित्रकूट ने जानकारी दी कि साइलिज पशुओं के स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है और इसका उपयोग करने से दुधारू पशुओं के दूध की गुणवत्ता में सुधार होता है।

साइलेज से किसानों को मिलेगा उच्च गुणवत्ता का चारा-डॉ अनीता तोमर

सूखे मौसम में हरे चारे की कमी दूर करने में मिलेगी मदद

चित्रकूट। दीनदयाल शोध संस्थान के गौवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्र में सूखे मौसम में हरे चारे की कमी को दूर करने को ग्रामीणों को साइलेज बनाने का प्रशिक्षण कार्यक्रम अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना-17 के तहत आयोजित किया गया।

गुरुवार को इस पहल के तहत ग्रामीणों व पशुपालकों को साइलेज बनाने की प्रक्रिया सिखाई गई। किसान ठंडी व गर्मी में पशुओं को पोषक चारा दे सकेंगे। कार्यक्रम में चारा बैंक बनाने की जानकारी दी गई। चारा बैंक भविष्य में पशुपालकों को हरे चारे की आपूर्ति सालभर करेगा। प्रयागराज से आई केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ अनीता तोमर ने कहा कि साइलो में किण्वन प्रक्रिया फसलों के पोषक तत्वों को बनाए रखने में मदद करती है। इससे पशुओं को संतुलित आहार सुनिश्चित होता है। ये एक भरोसेमंद ऊर्जा-समृद्ध चारा स्रोत बनता है। साइलेज में सूखी घास की तुलना में कहीं ज्यादा पौष्टिक तत्व व फीड के मुकाबले कम रसायन होते हैं। डीआरआई वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा प्रमुख डॉ मनोज त्रिपाठी ने बताया कि साइलेज पशुओं के स्वास्थ्य को अच्छा होता है। दुधारू पशुओं के दूध की गुणवत्ता में सुधार होता है। कार्यक्रम में प्रयागराज से शोर्थी स्वाति प्रिया, सत्यव्रत सिंह ने साइलेज बनाने के विधि का प्रशिक्षण व प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में वीरेंद्र प्रजापति, योगेंद्र मिश्रा, देव कुमार विश्वकर्मा आदि मौजूद रहे।

साइलिज़ बनाने की नई प्रक्रिया से किसानों को मिलेगा उच्च गुणवत्ता का चारा- डॉ. अनीता तोमर

विद्रोही सामना संवाददाता

प्रयागराज। भावाअशिप-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र ग्रामीणों को साइलिज़ बनाने का प्रशिक्षण का कार्यक्रम गौवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्र, चित्रकूट में केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह के मार्गदर्शन में 17 अक्टूबर 2024 आयोजित किया गया। अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना-17 (इध्उ-उ्) के अंतर्गत ग्रामीणों और पशुपालकों को साइलेज बनाने की प्रक्रिया सिखाई गई, जिससे कृषक सर्दियों और ग्रीष्मकाल में भी अपने पशुओं के लिए पोषक चारा उपलब्ध करा सकेंगे। इस कार्यक्रम के साथ ही, चारा बैंक बनाने की विस्तृत जानकारी दी है। इस कार्यक्रम के साथ ही, पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र ने प्रयागराज के पास सहजन, कचनार, गंभार और अगस्ती के 500 से अधिक पौधा रोपकर, उससे तैयार चारा बैंक की विस्तृत जानकारी दिया।

यह चारा बैंक भविष्य में पशुपालकों को हरे चारे की आपूर्ति सालभर करेगा। भा.वा.अ.शि.प. पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने कहा कि साइलो में किण्वन प्रक्रिया फसलों के पोषक तत्वों को बनाए रखने में मदद करती है,

जिससे पशुओं के लिए संतुलित आहार सुनिश्चित होता है और यह एक भरोसेमंद, ऊर्जा-समृद्ध चारा स्रोत बनता है। साइलेज में सूखी घास की तुलना में कहीं ज्यादा पौष्टिक तत्व और फीड के मुकाबले कम रसायन होते हैं। वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा प्रमुख, डॉ. मनोज त्रिपाठी, दीनदयाल अनुसंधान संस्थान (डीआरआई), चित्रकूट ने जानकारी दी की साइलिज़ पशुओं के स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है और इसका उपयोग करने से दुधारू पशुओं के दूध की गुणवत्ता में सुधार होता है। कार्यक्रम में प्रयागराज से आए शोर्थी स्वाति प्रिया, सत्यव्रत सिंह ने साइलेज बनाने के विधि का प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन दिया। क्रार्यक्रम में चित्रकूट से वीरेंद्र प्रजापति, योगेंद्र मिश्रा, देव कुमार विश्वकर्मा एवं अन्य लोग उपस्थित रहे।

न जागरण

साइलेज से किसानों को मिलेगा उच्च गुणवत्ता का चारा: डॉ अनीता तोमर

सूखे मौसम में हरे चारे की कमी दूर करने में मिलेगी मदद

चित्रकूट। दीनदयाल शोध संस्थान के गौवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्र में सूखे मौसम में हरे चारे की कमी को दूर करने को ग्रामीणों को साइलेज बनाने का प्रशिक्षण कार्यक्रम अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना-17 के तहत आयोजित किया गया।

गुरुवार को इस पहल के तहत ग्रामीणों व पशुपालकों को साइलेज बनाने की प्रक्रिया सिखाई गई। किसान ठंडी व गर्मी में पशुओं को पोषक चारा दे सकेंगे। कार्यक्रम में चारा बैंक बनाने की जानकारी दी गई। चारा बैंक भविष्य में पशुपालकों को हरे चारे की आपूर्ति सालभर करेगा। प्रयागराज से आई केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ अनीता तोमर ने कहा कि साइलो में किण्वन प्रक्रिया फसलों के पोषक तत्वों को बनाए रखने में मदद करती है। इससे पशुओं को संतुलित आहार सुनिश्चित होता है। ये एक भरोसेमंद ऊर्जा-समृद्ध चारा स्रोत बनता है। साइलेज में सूखी घास की तुलना में कहीं ज्यादा पौष्टिक तत्व व फीड के मुकाबले कम रसायन होते हैं।

डीआरआई वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा प्रमुख डॉ मनोज त्रिपाठी ने बताया कि साइलेज पशुओं के स्वास्थ्य को अच्छा होता है। दुधारू पशुओं के दूध की गुणवत्ता में सुधार होता है। कार्यक्रम में प्रयागराज से शोर्थी स्वाति प्रिया, सत्यव्रत सिंह ने साइलेज बनाने के विधि का प्रशिक्षण व प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में वीरेंद्र प्रजापति, योगेंद्र मिश्रा, देव कुमार विश्वकर्मा आदि मौजूद रहे।

एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

साइलिज़ (हरा चारा) बनाने की नई प्रक्रिया से किसानों को मिलेगा उच्च गुणवत्ता का चारा- डॉ. अनीता तोमर

कार्यालय संवाददाता

प्रयागराज। भा.वा.अ.शि.प.- पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र, प्रयागराज ने ग्रामीणों को साइ?लिज़ बनाने का प्रशिक्षण का कार्यक्रम गौवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्र, चित्रकूट में केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना-17 (इध्श्रें) के अंतर्गत ग्रामीणों और पशुपालकों को साइलेज बनाने की प्रक्रिया सिखाई गई, जिससे कृषक सर्दियों और ग्रीष्मकाल में भी अपने पशुओं के लिए पोषक चारा उपलब्ध करा सकेंगे। इस कार्यक्रम के साथ ही, चारा बैंक बनाने की विस्तृत जानकारी दी है। इस कार्यक्रम के साथ ही, पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र ने प्रयागराज के पास सहजन, कचनार, गंभार और अगस्ती के 500 से अधिक पौधा रोपकर, उससे तैयार चारा बैंक की विस्तृत जानकारी दिया।

यह चारा बैंक भविष्य में पशुपालकों को हरे चारे की आपूर्ति सालभर करेगा। भा.वा.अ.शि.प. - पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने कहा कि साइलो में किण्वन प्रक्रिया फसलों के पोषक तत्वों को बनाए रखने में मदद करती है, जिससे पशुओं के लिए संतुलित आहार सुनिश्चित होता है और यह एक भरोसेमंद, ऊर्जा-समृद्ध चारा स्रोत बनता है। साइलेज में सूखी घास की तुलना में कहीं ज्यादा पौष्टिक तत्व और फीड के मुकाबले कम रसायन होते हैं। वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा प्रमुख, डॉ. मनोज त्रिपाठी, दीनदयाल अनुसंधान संस्थान (डीआरआई), चित्रकूट ने जानकारी दी की साइलिज़ पशुओं के स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है और इसका उपयोग करने से दुधारू पशुओं के दूध की गुणवत्ता में सुधार होता है। कार्यक्रम में प्रयागराज से आए शोर्थी स्वाति प्रिया, सत्यव्रत सिंह ने साइलेज बनाने के विधि का प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन दिया। क्रार्यक्रम में चित्रकूट से वीरेंद्र प्रजापति, योगेंद्र मिश्रा, देव कुमार विश्वकर्मा एवं अन्य लोग उपस्थित रहे।

साइलिज बनाने की नई प्रक्रिया से किसानों को मिलेगा उच्च गुणवत्ता का चारा . डॉ अनीता

सूखे मौसम में हरे चारे की कमी को दूर करने अनुसंधान केन्द्र में दिया प्रशिक्षण

प्रदेश टुडे संवाददाता, सतना

दीनदयाल शोध संस्थान के गौवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्रए चित्रकूट में गुरुवार को पुनर्स्थापन केंद्र प्रयागराज द्वारा सूखे मौसम में हरे चारे की कमी को दूर करने के लिए ग्रामीणों को साइलिज बनाने का प्रशिक्षण कार्यक्रम अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना.17 ;थ्व्क्क्म्द्ध के अंतर्गत सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। इस पहल के अंतर्गत ग्रामीणों और पशुपालकों को साइलेज बनाने की प्रक्रिया सिखाई गई, जिससे कृषक सर्दियों और ग्रीष्मकाल में भी अपने पशुओं के लिए पोषक चारा उपलब्ध करा सकेंगे। इस कार्यक्रम के साथ हीए चारा

बैंक बनाने की विस्तृत जानकारी दी है। यह चारा बैंक भविष्य में पशुपालकों को हरे चारे की आपूर्ति सालभर करेगा। प्रयागराज से आई केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने कहा कि साइलो में किण्वन प्रक्रिया फसलों के पोषक तत्वों को बनाए रखने में मदद करती हैए जिससे पशुओं के लिए संतुलित आहार सुनिश्चित होता है और यह एक भरोसेमंद, ऊर्जा.समृद्ध चारा स्रोत बनता है। साइलेज में सूखी घास की तुलना में कहीं ज्यादा पौष्टिक तत्व और फीड के मुकाबले कम रसायन होते हैं। वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा प्रमुखए डॉ. मनोज त्रिपाठीए दीनदयाल अनुसंधान संस्थान ;डीआरआईद्धए चित्रकूट ने जानकारी दी कि साइलिज पशुओं के स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है और इसका उपयोग करने से दुधारू पशुओं के दूध की गुणवत्ता में सुधार होता है। कार्यक्रम में प्रयागराज से आए शोर्थी स्वाति प्रियाए सत्यव्रत सिंह ने साइलेज बनाने के विधि का प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन दिया।

सूखे मौसम में हरे चारे की कमी को दूर करने गौवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्र में प्रशिक्षण

साइलिज़ बनाने की नई प्रक्रिया से किसानों को मिलेगा उच्च गुणवत्ता का चारा : डॉ अनीता तोमर

नवभारत न्यूज

चित्रकूट 17 अक्टूबर. दीनदयाल शोध संस्थान के गौवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्र, चित्रकूट में गुरुवार को भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र, प्रयागराज द्वारा सूखे मौसम में हरे चारे की कमी को दूर करने के लिए ग्रामीणों को साइलिज़ बनाने का प्रशिक्षण कार्यक्रम अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना-17 (स्त्रह्लष्ठष्ठश्चक्र) के अंतर्गत सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

इस पहल के अंतर्गत ग्रामीणों और पशुपालकों को साइलेज बनाने की प्रक्रिया सिखाई गई, जिससे कृषक सर्दियों और ग्रीष्मकाल में भी अपने पशुओं के लिए पोषक चारा उपलब्ध करा सकेंगे। इस कार्यक्रम के साथ ही, चारा बैंक बनाने की विस्तृत जानकारी दी है। यह चारा बैंक भविष्य में पशुपालकों को हरे चारे की आपूर्ति सालभर करेगा।

प्रयागराज से आई केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने कहा कि साइलो में किण्वन प्रक्रिया फसलों के पोषक तत्वों को बनाए रखने में मदद करती है, जिससे पशुओं के लिए संतुलित आहार सुनिश्चित होता है और यह एक भरोसेमंद, ऊर्जा-समृद्ध चारा स्रोत बनता है। साइलेज में सूखी घास की तुलना में कहीं ज्यादा पौष्टिक तत्व और फीड के मुकाबले कम रसायन होते हैं।

वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा प्रमुख, डॉ. मनोज त्रिपाठी, दीनदयाल अनुसंधान संस्थान (डीआरआई), चित्रकूट ने जानकारी दी कि साइलिज़ पशुओं के स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है और इसका उपयोग करने से दुधारू पशुओं के दूध की गुणवत्ता में सुधार होता है। कार्यक्रम में प्रयागराज से आए शोर्थी स्वाति प्रिया, सत्यव्रत सिंह ने साइलेज बनाने के विधि का प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन दिया। कार्यक्रम में चित्रकूट से वीरेंद्र प्रजापति, योगेंद्र मिश्रा, देव कुमार विश्वकर्मा एवं अन्य लोग उपस्थित रहे।